अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2018) **दिनांक : 21-12-2018**

समय सीमा : 3 घंटा **प्रथम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

भिक्षु विचार दर्शन–80

प्र. 1 ग्यारह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए। 11

(क) आचार्य भिक्षु के किस सूत्र ने संघ को प्राणवान बना दिया?

(ख) बौद्ध भिक्षुओं की निजी सम्पत्ति क्या थी?

(ग) एक साधु आहार पानी की भिक्षा लाए, संविभाग न करे, मैं लाया हूँ, ऐसा सोच जो अधिक लेता है, उसे कौन सा दोष लगता है?

(घ) वे पाँच कौन से महान दोष है, जिनके द्वारा जीव दुःख की परम्परा को बनाए रखता है?

(ङ) उपाध्याय का कार्य क्या है?

(च) आचार्य भिक्षु ने किस व्यक्ति को संघ में रहने के अयोग्य बताया है?

(छ) भगवान ऋषभनाथ को प्रथम दान किसने व क्या दिया?

(ज) कोई अनुकम्पा वश किसी का सहयोग करता है कोई किसी के कार्य में बाधा डालता है। ये मनुष्य के कौन से मनोभाव हैं?

(झ) आचार्य भिक्षु ने साधु-असाधु के क्या लक्षण बताए?

(ञ) आत्मवादी का साध्य और साधन क्या है?

(ट) किसान जो हिंसा करता है, यह वध अनिवार्य होकर क्षम्य भले ही गीना जाए किन्तु अहिंसा निश्चय ही नहीं है। यह परिभाषा किसने किस विषय पर दी?

(ठ) दया शब्द किन दो भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है?

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 15

(क) गण से पृथक हुए व्यक्ति के विषय में आचार्य भिक्षु के दृष्टिकोण को स्पष्ट करें।

(ख) अनुशासन का उद्देश्य बताते हुए आचार्य भिक्षु ने जिन तीन नौकाओं का उदाहरण दिया है, उन्हें स्पष्ट करें।

(ग) आचार्य भिक्षु की साध्य मीमांसा का सार क्या है?

(घ) एक व्यक्ति आचार्य भिक्षु से चर्चा कर रहा था, उसकी बुद्धि अल्प थी तब लोगों ने आग्रह किया कि आप इसे समझाइए तब आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ङ) किसी ने आचार्य भिक्षु से कहा आपके प्रयोग बड़े कड़े हैं। प्रत्युत्तर में आपने क्या कहा और कड़े प्रयोगों द्वारा उन्होंने किस पर प्रहार किया?

(च) हिंसा का उपोदय व व्यवहार पक्ष क्या रहा?

(छ) ''असंयमी स्वयं खाए वह पाप और दूसरे असंयमी को खिलाए वह धर्म है।'' इस कथन पर आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए। 24

(क) साधु और श्रावक का मोक्ष पथ एक ही है, अन्तर केवल मात्रा का है। स्पष्ट करें।

(ख) घटना प्रसंगों से सिद्ध करें कि महापुरूषों की कार्यसिद्धि उनके सत्व में होती है उपकरणों में नहीं।

(ग) दोष परिमार्जन के लिए आचार्य भिक्षु द्वारा लिखे लिखत का सारांश लिखें।

(घ) तार्किक दृष्टिकोण से न तो मर्यादाओं का पालन किया जा सकता है और न कराया जा सकता है। पालन करने वाला श्रद्धावान व हृदयवान हो, तभी उसका निर्वाह हो सकता है। स्पष्ट करें।

(ङ) धर्म के साथ पुण्य का बन्ध हो सकता है पर पुण्य के साथ धर्म नहीं किया जा सकता। आचार्य भिक्षु की मान्यतानुसार स्पष्ट करें।

(च) आचार्य भिक्षु की सिद्धान्त वाणी के मौलिक निष्कर्ष क्या हैं? लिखें।

प्र. 4 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें— 30

स्पष्ट करें कि आ. भिक्षु तार्किक बुद्धि से सम्पन्न थे।

(क) गण और गणी पर लेख लिखें।

(ख) आचार्य भिक्षु के दान दया के सिद्धान्त को विस्तार से समझाइए।

(ग) राजनैतिक दूरदर्शिता की दृष्टि से सैनिक सहयोग का समर्थन नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार आत्मिक दृष्ट से संयम को दिए जाने वाले सांसारिक सहयोग को धार्मिक उच्चता नहीं दी जा सकती। गांधीजी व आ. भिक्षु के विचारों को स्पष्ट करें।

भिक्षु वाणी

प्र. 5 किन्हीं दो पद्यों का सप्रसंग भावार्थ करें। 8

(क) खाए पीए.....कोतल छूटा।

(ख) गुर भगता.....तिण ठाम।

(ग) मोटका ने.....चाति निधान।

(घ) कालो नाम.....मरण बधारें।

प्र. 6 किन्हीं दो पद्यों की पूर्ति करें। 6

(क) समचें दान.....भेल सभेली।

(ख) घर में धन.....करें गुमान।

(ग) जे कायर.....बिगाड़ियो।

(घ) ते पाप.....नहीं दोष।

प्र. 7 कोई दो पद्य लिखें। 6

(क) अज्ञानी

(ख) कामयोग

(ग) परिग्रह

(घ) आत्मसाक्षी